राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
गुरुवार 29 मार्च 2018
आजकल
14
www.jagran.com

मंगल पांडे ने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की मशाल फूंकी

1857 में आज ही बंगाल नेटिव इनफैंट्री की 34वीं रेजीमेंट में सिपाही रहे मंगल पांडे ने अंग्रेजों की नीतियों के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह कर दिया। उनके इस विद्रोह ने 1857 के पहले स्वतंत्रता संग्राम की आधारशिला रखी। बाद में इस विद्रोह की आग पूरे देश भर में फैल गई।

बुध ग्रह तक जाने वाला पहला प्रोब बना मैरीनर 10

नासा ने बुध और शुक्र ग्रह के लिए मैरीनर 10 के रूप में रोबोटिक स्पेस प्रोब तीन नवंबर 1973 को लांच किया। करीब पांच महीने बाद यानी 1974 में आज ही के दिन यह यान बुध के बेहद करीब से गुजरने वाला पहला यान बना। इस दौरान उसने कई अहम सूचनाएं भेजी।

बहुमुखी प्रतिभावान अभिनेता उत्पल दत्त का जन्मदिन

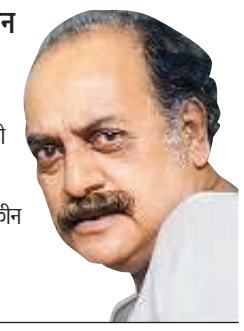

अभिनय की एक विधा को अपने नाम का पर्याय बना देने वाले अभिनेता उत्पल दत्त आज ही 1929 में कोलकाता में पैदा हुए। रंगमंच और कैमरे के सामने समान सहज भाव से अभिनय करने वाले इस कलाकार को बंगाली और हिंदी सिनेमा ने एक सा सम्मान दिया। सेंट जेवियर कॉलेज से डिग्री लेने के बाद अपना थियेटर खोला। 1950 में पहली बंगाली फिल्म माइकेल मधुसूदन की। हिंदी फिल्मों में गुड्डी, नमकहराम, गोलमाल और शौकीन में अभिनय की छाप छोड़ी। 19 अगस्त, 1993 को दिल के दौरे ने इस अभिनेता को दुनिया से छीन लिया।

भारत पर भी गिर सकता है चीनी अंतरिक्ष केंद्र

घबराने की जरूरत नहीं है, लेकिन यह सच है। अनियंत्रित हो चुका चीनी स्पेस लैब तियांगोंग तेजी से धरती की ओर आ रहा है। इस अंतरिक्ष केंद्र पर निगरानी रख रही यूरोपियन स्पेस एजेंसी के मुताबिक यह धरती के वायुमंडल में 30 मार्च से दो अप्रैल के बीच प्रवेश कर सकता है। वहीं चाइना मैन्ड स्पेस इंजीनियरिंग के वैज्ञानिक इस तारीख को 31 मार्च से चार अप्रैल के बीच बता रहे हैं। हालांकि दोनों ही संस्थाएं अपने अनुमान के आगे-पीछे होने की बात भी कह रही हैं। वैज्ञानिक इससे किसी भी प्रकार के नुकसान न होने को लेकर आश्वस्त हैं। इसकी पर्याप्त वजहें बताई जा रही है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि यह 43 अक्षांश उत्तर से लेकर 43 अक्षांश दक्षिण के मध्य के व्यापक क्षेत्र में कहीं भी गिर सकता है। इसी भौगोलिक क्षेत्र में भारत भी आता है।

तियांगोंग-1 : चीनी स्पेस सुपरपॉवर का प्रतीक

अंतरिक्ष में अपनी ताकत दिखाते हुए चीन ने सितंबर 2011 में इसे जब लांच किया तो इसे 'स्वर्ग में राजमहल' कहा। यह चीन का पहला अंतरिक्ष केंद्र था। लांचिंग मानवरहित हुई, लेकिन डिजायनिंग इस प्रकार हुई थी कि अन्य यान इससे जुड़ सकें और शोध किया जा सके। 2012 में चीन की पहली महिला अंतरिक्षयात्री लियू यांग इस अंतरिक्ष केंद्र में जाकर प्रयोग किया। 2013 में चीन की दूसरी महिला अंतरिक्ष यात्री वांग यापिंग भी यहां पहुंची।

कितनी बड़ी चिंता

अंतरिक्ष विशेषज्ञों की मानें तो इस अंतरिक्ष केंद्र से इंसान को न के बराबर खतरा है। उनके अनुसार अंतरिक्ष कचरे के धरती पर गिरने के एक लाख करोड़ मामलों में कोई एक इंसान को खतरा पहुंच सकता है। इससे अधिक तो बिजली गिरने के 14 लाख मामलों में किसी एक व्यक्ति के हताहत होने की आशंका होती है। करीब 70 फीसद धरती पर पानी है। शेष बचे हिस्से में से ज्यादातर निर्जन हैं या बहुत विरल आबादी है। 1997 में डेल्टा रॉकेट का हिस्सा एक महिला के कंधे पर गिरा था, लेकिन वह घायल नहीं हुई थी। किसी इंसान पर अंतरिक्ष कचरा गिरने का यह पहला मामला है।

नुकसान की भरपाई

इस अंतरिक्ष केंद्र से अगर कोई नुकसान होता है तो उसकी भरपाई चीन को करनी होगी। 1972 की इंटरनेशनल लाइबिलिटी फॉर डैमेज काज्ड बाय स्पेस ऑब्जेक्ट संधि के अनुसार इसके लिए लांचिंग देश जिम्मेदार होता है। अभी तक एक ही बार इस संधि का इस्तेमाल किया गया है। 1978 में तत्कालीन सोवियत संघ का परमाणु ऊर्जा संचालित कॉस्मॉस 954 सेटेलाइट गिर गया था। इससे कनाडा के ऊपर परमाणु कचरा बिखर गया। कनाडा ने सोवियत संघ को 60 लाख कनाडाई डॉलर का बिल थमा दिया। हालांकि उसे केवल 30 लाख डॉलर ही हासिल हुए।

कहां गिर सकता है

यह अंतरिक्ष केंद्र 27 हजार किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चक्कर काट रहा है। ऐसे में इसके धरती पर गिरने के स्थान का अनुमान लगाना मुश्किल है। सेटेलाइट केवल इसकी कक्षा के अक्षांश का पता लगा सकता है जो 43 डिग्री उत्तर से 43 डिग्री दक्षिण है। इस क्षेत्र में भारत समेत तमाम देश आते हैं।

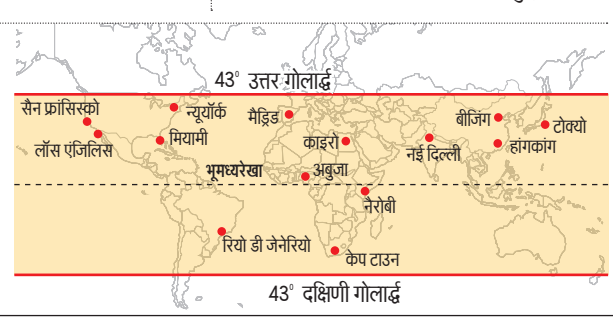

अनियंत्रित अंतरिक्ष कचरे का वायुमंडल में पुन : प्रवेश (1957 से)

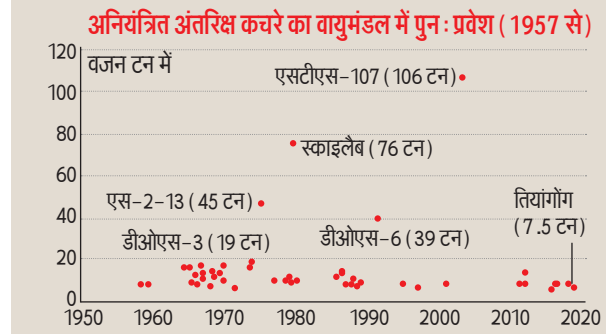

मीर अंतरिक्ष केंद्र- 2001 में 135 टन के रूसी अंतरिक्ष केंद्र मीर को धरती पर गिराना पड़ा। इसे नियंत्रित तरीके से गिराया गया। धरती के वायुमंडल में प्रवेश करने के दौरान इसके अधिकांश हिस्से जल गए शेष को समुद्र में गिरा दिया गया।

स्काईलैब- 74 टन वजनी अमेरिका का पहला अंतरिक्ष केंद्र 1979 में धरती पर अनियंत्रित होकर गिरा। इसके कुछ हिस्से पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के निर्जन इलाकों में गिरे। कोई नुकसान नहीं हुआ लेकिन कचरा गिराने के लिए अमेरिका को 400 डॉलर का हर्जाना चुकाना पड़ा।

इधर उधर की

एक उल्लू ने डाला रंग में भंग

लंदन, एजेंसी : ब्रिटेन के कुछ इलाकों में शादी के दौरान एक रस्म आज भी अदा की जाती है। इस रस्म के तहत एक उल्लू जिसके पैरों से अंगूठी बंधी होती है, वह दूल्हा-दुल्हन के पास जाकर अंगूठी देता है। इसे दोनों एक दूसरे को पहनाकर जीवन भर साथ रहने की कसमें खाते हैं। यहां के चेशायर में जेनी एरेस्मिथ और मार्क वुड की शादी में भी ऐसा सबकुछ नियोजित था। ऐन मौके पर उल्लू अंगूठी लेकर उड़ा, लेकिन दूल्हा-दुल्हन के पास न जाकर किसी तीसरे शख्स के पास पहुंच गया। जिनके पास गया, वे जनाब उल्लुओं से बहुत डरते थे, लिहाजा मारे डर के वे कुर्सी समेत जमीन पर धड़ाम से गिर गए। थोड़ी देर के लिए मामला गंभीर हो गया, लेकिन फिर लोगों के ठहाके गूंजने लगे। आखिरकार उल्लू को सही जगह पहुंचाकर शादी को संपन्न कराया गया।

शोध अनुसंधान

नई प्रणाली से बेहतर होगी याददाश्त

वैज्ञानिकों ने याददाश्त को बेहतर करने की दिशा में बड़ी कामयाबी हासिल की है। उन्होंने एक कृत्रिम प्रणाली विकसित कर मस्तिष्क में सफलतापूर्वक प्रत्यारोपित की। वैज्ञानिकों का दावा है कि इससे याददाश्त को बेहतर किया जा सकता है। इस तरीके से अल्जाइमर जैसे रोगों के इलाज में भी मदद मिल सकती है। अमेरिका के वेक फॉरेस्ट बैप्टिस्ट मेडिकल सेंटर और सदर्न कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं के अनुसार, कृत्रिम प्रणाली में पीड़ित व्यक्ति के मेमोरी पैटर्न का इस्तेमाल किया गया है। इससे मस्तिष्क की स्मृति क्षमता दुरुस्त की जा सकती है। प्रतिभागियों पर किए गए परीक्षण में इस तरीके से स्मृति क्षमता में 35 से 37 फीसद तक सुधार पाया गया। वेक फॉरेस्ट के प्रोफेसर रॉबर्ट हैम्पसन ने कहा, यह पहली बार हुआ है जब वैज्ञानिक रोगी के स्मृति संबंधी पैटर्न की पहचान करने में सफल हुए हैं। यह स्मरण शक्ति में गिरावट को दुरुस्त करने की दिशा में पहला कदम है। -प्रेट्र

रहस्यमय ब्रह्मांड ▶ फ्रांस और ब्रिटेन के वैज्ञानिकों ने लगाया पता

सौरमंडल के बाहर खोजा गया अत्यधिक गर्म ग्रह

बुध के बराबर घनत्व वाला यह ग्रह दिन में दो हजार डिग्री सेल्सियस से ज्यादा हो जाता है गर्म

लंदन, प्रेट्र : अंतरिक्ष हमेशा से ही खगोलविदों के लिए रहस्यमय संसार रहा है। वे लगातार हमारे सौरमंडल और सौरमंडल के बाहर के ग्रहों के बारे में नई बातें जानने के प्रयास में रहते हैं ताकि इन रहस्यों पर से पर्दा उठाया जा सके। इसी कड़ी में वैज्ञानिकों को एक बड़ी कामयाबी हाथ लगी है। दरअसल, वैज्ञानिकों के एक दल ने सौरमंडल से 26 करोड़ प्रकाश वर्ष दूर एक अत्यधिक गर्म ग्रह की खोज की है।

पृथ्वी से 20 गुना बड़ा है ग्रह : धातु के किसी पिंड की तरह दिखने वाले इस के2-229-बी ग्रह का आकार पृथ्वी से 20 फीसद अधिक और द्रव्यमान ढाई गुना ज्यादा है। यह ग्रह 'के' नामक छोटे तारे की परिक्रमा 14 घंटे में पूरी करता है। तारे के समीप होने से दिन में इसका तापमान दो हजार डिग्री सेल्सियस से भी ऊपर चला जाता है।

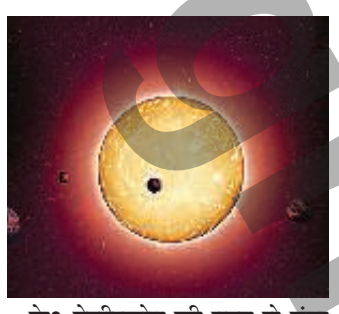

के2 टेलीस्कोप की मदद से ढूंढ़ा : फ्रांस की एक्स-मार्सेली यूनिवर्सिटी और ब्रिटेन स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ वारविक के खगोलविदों ने के2 टेलीस्कोप की मदद से इस ग्रह की खोज की है। शोधकर्ता आर्मस्ट्रांग का कहना है, 'हमें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि बुध ग्रह के बराबर घनत्व वाला कोई ग्रह हमारे सौर मंडल के बाहर भी मौजूद है। बुध का निर्माण बहुत ही अलग तरह से हुआ है और उस पर आयरन की मात्रा भी अधिक है। इस कारण बुध को एक अनोखा ग्रह माना जाता था।'

उत्पत्ति के विषय में लगाए जा रहे कयास

के2-229बी के साथ दो अन्य ग्रह भी उस तारे की परिक्रमा कर रहे हैं। इन तीनों ही ग्रह और तारे की दूरी बुध ग्रह और सूर्य के बीच की दूरी से कम है। वैज्ञानिक के2-229 बी के उत्पत्ति से जुड़े कई कयास भी लगा रहे हैं। कुछ का मानना है कि जिस तरह पृथ्वी और मंगल जैसे किसी खगोलीय पिंड की टक्कर से चंद्रमा का निर्माण हुआ उसी तरह इस ग्रह की भी उत्पत्ति हुई होगी।

ये चल सकता है पता

खगोलविद इस खोज को बेहद ही महत्वपूर्ण बता रहे हैं। खगोलविदों का मानना है कि इस ग्रह की कई विशेषताएं बुध से मेल खाती हैं। इसलिए बुध से जुड़े रहस्यों से पर्दा उठाकर नए ग्रह से जुड़ी जानकारियां इकट्ठा की जा सकेंगी।

अब आइसक्रीम जल्दी नहीं पिघलेगी

वाशिंगटन, प्रेट्र : आइसक्रीम सभी को पसंद है। इसे खाने में एक अलग ही आनंद आता है, लेकिन इसके साथ ही एक डर भी रहता है। इसके जल्दी पिघलने का। इसी वजह है कि इसे जल्दी-जल्दी खाना पड़ता है, फिर चाहे जल्दबाजी में दांतों में दर्द ही क्यों न होने लगे। कैसा हो अगर आप अपनी पसंदीदा आइसक्रीम का लुत्फ बेहद बिना इस डर के देर तक ले सकें। इसका रास्ता अब तलाश लिया गया है। शोधकर्ताओं के मुताबिक, केले के छिलकों का इस्तेमाल कर आइसक्रीम को जल्द पिघलने से रोका जा सकता है। दरअसल, केले के छिलके में छोटे-छोटे फाइबर पाए जाते हैं, जिन्हें सेल्युलोज कहा जाता है। फाइबर से आइसक्रीम और स्वादिष्ट, क्रीमी बनती है और ज्यादा देर तक नहीं पिघलती।

कोलंबिया में यूनिवर्सिटी पोंटिफिसिआ बोलीवारिआना के रॉबिन जूलुअंगा गैलेगो के मुताबिक, हमारे निष्कर्षों से पता चलता है कि केले के छिलके से पाए जाने वाले सेल्युलोज नैनो फाइबर कई तरह से आइसक्रीम को बेहतर बनाने में मदद कर सकते हैं। फाइबर की वजह से आइसक्रीम गाढ़ी बनती है, जिसके चलते इसके पिघलने में अधिक समय लगता है। गैलेगो के मुताबिक, इसकी वजह से हम आइसक्रीम का मजा ज्यादा देर तक ले सकते हैं।

फिनलैंड के स्कूल में बच्चों को पढ़ा रहा रोबोट टीचर

फिनलैंड के टेंपरी स्थित प्राइमरी स्कूल में बच्चों को पढ़ाता लियास नाम का रोबोट। रायटर

हेलसिंकी, रायटर : फिनलैंड के टेंपरी स्थित प्राइमरी स्कूल में एक नया टीचर आया है। वह 23 भाषाएं बोल और समझ सकता है। बच्चों के बार-बार एक ही सवाल करने पर भी वह गुस्सा नहीं करता बल्कि शांति से उसका जवाब देता है। यही नहीं, पढ़ते-पढ़ते अगर बच्चे ऊब जाएं तो उनके मनोरंजन के लिए वह गंगनम स्टाइल में डांस भी करता है। दरअसल, यह टीचर कोई असाधारण इंसान नहीं बल्कि एक रोबोट है।

23 भाषाएं बोल सकता है, गंगनम स्टाइल में करता है डांस

लैंग्वेज पढ़ाने वाले एक फुट लंबे एलियास नाम के इस रोबोट को सॉफ्टबैंक के एनएओ ह्यूमनॉइड इंटेरेक्टिव कंपेनियन रोबोट प्रोग्राम के तहत विकसित किया गया है। यूटेलियास नाम की एक कंपनी ने इसका सॉफ्टवेयर तैयार किया है। टेंपरी के प्राइमरी स्कूलों में इस तरह के रोबोट का पायलट परीक्षण किया जा रहा है। इस परीक्षण का मकसद यह देखना है कि क्या इन रोबोट की मदद से अध्यापन की गुणवत्ता बढ़ाई जा सकती है। एलियास बच्चों से अंग्रेजी, फिनिश और जर्मन भाषा में बात करता है। साथ ही वह बच्चों को पढ़ाई के दौरान आनी वाली परेशानियों से उनके टीचर को भी अवगत कराता है। स्कूल टीचर रीका कोलुनसार्का का कहना है, 'बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित करना बहुत महत्वपूर्ण है। एलियास की मदद से बच्चों को क्लास रूम में सक्रिय किया जा सकता है। इसे देखकर बच्चे पढ़ाई में ज्यादा रुचि लेते हैं।' बच्चों ने भी इस नई तकनीक के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है। स्कूल ने इस रोबोट को खरीद लिया है।**नहीं जाएगी शिक्षकों की नौकरी :** विश्लेषकों का कहना है कि इन रोबोट के पास बच्चों के हर सवाल का जवाब उपलब्ध है, लेकिन वह क्लास में अनुशासन बनाए नहीं रख सकता। इसलिए फिलहाल शिक्षकों को अपनी नौकरी जाने की फिक्र नहीं करनी चाहिए।

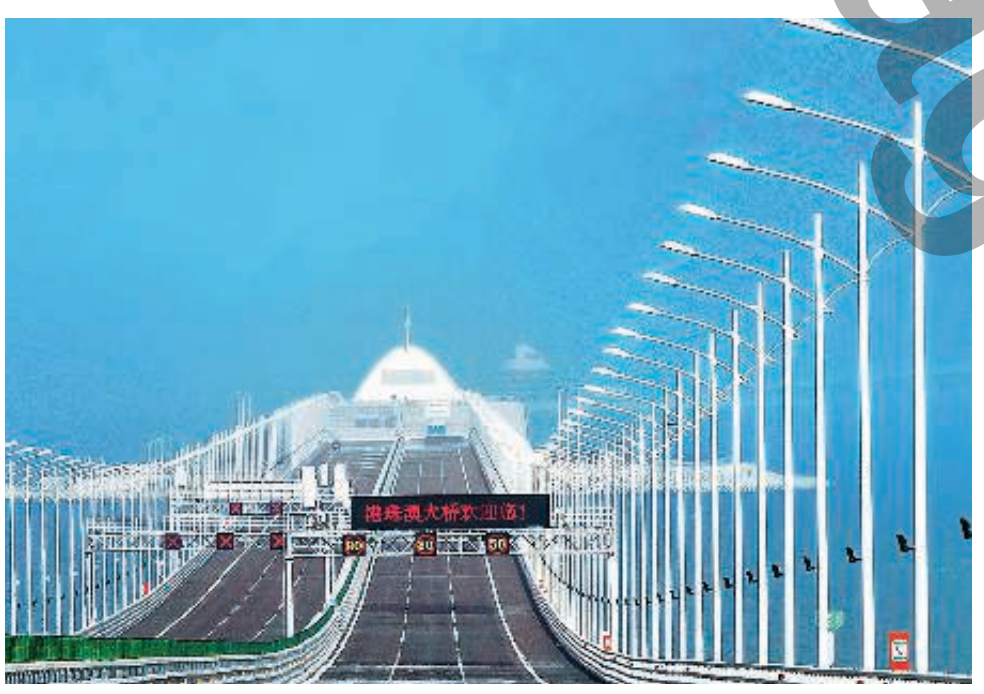

समुद्र पर दुनिया का सबसे लंबा पुल...

चीन के झुहाई शहर में समुद्र पर बने दुनिया के सबसे लंबे पुल 'हांगकांग-झुहाई-मकाउ' के एक हिस्सा का नजारा। आगामी जुलाई में इसे आम यातायात के लिए खोल दिया जाएगा। इस पुल की कुल लंबाई 55 किलोमीटर है। इसमें 23 किलोमीटर केबल ब्रिज, 6.7 किलोमीटर अंडर सी-टनल (समुद्र में सुरंग) और शेष भाग दो कृत्रिम द्वीपों से होकर गुजरता है। यह पुल झुहाई शहर और चीन के विशेष प्रशासनिक क्षेत्र हांगकांग तथा मकाउ को जोड़ता है। अधिकारियों के मुताबिक इस पुल से इनके बीच यात्रा का समय कम हो जाएगा। हालांकि हांगकांग में विरोधी इसे चीन की अर्द्धस्वायत्त क्षेत्र पर पकड़ मजबूत करने की एक और कोशिश के तौर पर देखते हैं। एएफपी

स्क्रीन शॉट

दिशा पटानी ने टाइगर श्रॉफ के साथ रिश्तों को नकारा

फिल्म के प्रमोशन के लिए आज के सितारों को अपने रिश्तों को भी दांव पर लगाने में कोई संकोच नहीं होता। जैकी श्रॉफ के बेटे टाइगर श्रॉफ के साथ दिशा पटानी की रिलेशनशिप को लेकर बॉलीवुड से लेकर सोशल मीडिया पर शायद ही किसी को शक हो। इन दोनों ने फिल्म में तो अब आकर काम किया है, लेकिन कई सालों से दोनों बॉलीवुड की पार्टियों से लेकर दूसरे आयोजनों में साथ देखे जाते रहे हैं। इसके बावजूद दोनों को एक साथ वाली अपनी पहली फिल्म के रिलीज होने से पहले यह ऐलान करना पड़ रहा है कि उनके बीच दोस्ती से ज्यादा रिश्ता नहीं है। बॉलीवुड में इसे 'वी आर जस्ट फ्रैंड्स' का टैग दिया जाता है, जिसकी हकीकत से हर कोई वाकिफ रहता है। दिशा ने बड़ी मासूमियत से टाइगर को लेकर कह दिया कि कोई कुछ भी समझे, लेकिन हमारे बीच दोस्ती से ज्यादा कुछ नहीं है। टाइगर भी दिशा को लेकर इसी तरह की घुमा-फिराकर बातें कह रहे हैं। एक बार फिल्म रिलीज हो जाएगी, तो फिर रिश्ता दोस्ती से आगे वहीं पहुंच जाएगा, जहां यह हुआ करता है। फिलहाल यहां तो प्रमोशन के लिए कुछ भी करेगा जैसा मामला नजर आ रहा है। -मुंबई ब्यूरो

आ गया अमिताभ बच्चन की नई फिल्म का ट्रेलर

इस साल रिलीज होने वाली अमिताभ बच्चन की पहली फिल्म '102 नॉट आउट' का ट्रेलर लॉन्च हो गया है। इसे बुधवार को सोशल मीडिया पर लॉन्च किया गया। फिल्म का पहला टीजर बीते फरवरी माह में अक्षय कुमार की फिल्म 'पैडमैन' के साथ आया था। गुजराती नाटक पर आधारित यह फिल्म पिता-पुत्र के रिश्तों पर आधारित है, जिसमें पिता, यानी अमिताभ बच्चन की उम्र 102 साल की है, जबकि उनके बेटे की उम्र 75 साल की है, जिसकी भूमिका में ऋषि कपूर हैं। फिल्म को कॉमेडी और इमोशन का टच दिया गया है। अमिताभ बच्चन और ऋषि कपूर 27 साल बाद एक साथ परदे पर लौट रहे हैं। इससे पहले दोनों ने शशि कपूर की फिल्म 'अजूबा' में काम किया था।-मुंब्यू

दो पाटों के बीच में फंसीं सारा अली खान

सैफ अली खान और अमृता सिंह की बेटी सारा अली खान की हालत उस व्यक्ति की तरह हो गई है, जो दो पाटों के बीच फंसकर कसमसाता रह जाता है। कुछ वक्त पहले तक सारा अली खान बेहद खुश थीं, क्योंकि उनकी लॉन्चिंग फिल्म 'केदारनाथ' जोर-शोर से शुरू हुई थी। लेकिन इस फिल्म को लेकर निर्देशक अभिषेक कपूर और प्रोड्यूसर प्रेरणा अरोड़ा के बीच मतभेद इतने ज्यादा गहराए कि 'केदारनाथ' का भविष्य ही खतरे में पड़ता नजर आने लगा। इस खतरे को भांपते हुए पापा सैफ अली खान ने करण जौहर से मुलाकात की। इस मुलाकात का नतीजा यह हुआ कि करण जौहर की कंपनी में बनने जा रही रोहित शेट्टी की फिल्म 'सिंबा' में सारा अली खान को रणवीर सिंह की हीरोइन बना दिया गया। यह सुगबुगाहट भी तेज होने लगी कि शायद 'सिंबा' से ही सारा अली खान फिल्मी परदे पर अवतरित हों। इस बीच 'केदारनाथ' को लेकर निर्देशक और निर्माता के बीच मतभेदों की बर्फ पिघलने लगी और फिल्म का मामला आगे बढ़ने लगा। 'सिंबा' शुरू होने जा रही है और 'केदारनाथ' में भी सारा अली खान का काफी काम बाकी है। अब दोनों फिल्मों के लिए सारा की डेट्स डायरी का घमासान चल रहा है। सूत्र यही बता रहे हैं कि 'केदारनाथ' से पहले 'सिंबा' रिलीज हो जाएगी। -मुंब्यू

कपिल शर्मा फिर से फंसे

कपिल शर्मा सोनी चैनल पर अपने फैमिली शो के साथ लौटकर जरूर आए हैं, लेकिन एक ओर उनके शो को लेकर मिल रहा शुरुआती रिस्पांस बहुत अच्छा नहीं माना जा रहा है, तो दूसरी ओर खुद कपिल शर्मा लगातार विवादों में घिरते जा रहे हैं। उनके इस नए शो को लेकर खबर आई कि 'बागी 2' की टीम को इसलिए उनके सेट से बैरंग लौटना पड़ा, क्योंकि कपिल खुद शूटिंग के लिए हाजिर नहीं हुए। कपिल शर्मा को यह नागवार गुजरा, तो उन्होंने सोशल मीडिया पर इसे लेकर अपनी सफाई पेश की। इससे पहले उनकी सफाई किसी के गले से नीचे उतरती, अब एक और ऐसी ही खबर आ गई है। खबर यह आई कि 'बागी 2' के बाद रानी मुखर्जी, कपिल शर्मा के सेट पर 'हिचकी' के प्रमोशन के लिए जाने वाली थीं, लेकिन यहां भी सीन लगभग यही हुआ कि कपिल शर्मा की गैरमौजूदगी की वजह से रानी के साथ शूटिंग नहीं हो पाई। एक ओर यशराज के सूत्र इस खबर को कंफर्म कर रहे हैं, तो दूसरी ओर सोनी के सूत्र बता रहे हैं कि शो को मिल रहे औसत रिस्पॉन्स से चैनल के बॉस लोग टेंशन में आ गए हैं। शो शुरू होने से पहले कपिल शर्मा की प्रेस कांफ्रेंस रद्द होने से भी चैनल की किरकिरी हुई। सोनी के सूत्रों के मुताबिक, चैनल का प्रबंधन अब सलमान के शो 'दस का दम' पर फोकस करना चाहता है, जो जून में वापसी करेगा। -मुंब्यू

अध्ययन

आइआइटी इंदौर और आइआइटी गुवाहाटी के शोधकर्ताओं द्वारा किए अध्ययन में आया सामने, जलवायु अनुकूलन केलिए भू-जलविज्ञानियों, सरकारी एजेंसियों और स्थानीय समुदायों के बीच परस्पर समन्वय की जरूरत

जन भागीदारी से ही जलवायु अनुकूलन संभव

नई दिल्ली, आइएसडब्ल्यू : जलवायु परिवर्तन का सामना करने और इससे जुड़ी चुनौतियों के साथ अनुकूलन स्थापित करने के लिए भू-जलविज्ञानियों, सरकारी एजेंसियों और स्थानीय समुदायों के बीच परस्पर समन्वय स्थापित करने और साथ मिलकर काम करने की जरूरत है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी), इंदौर और आइआइटी, गुवाहाटी के शोधकर्ताओं द्वारा किए गए एक अध्ययन में यह बात सामने आई है।

नीति-निर्माताओं, शोधकर्ताओं, सलाहकारों, स्थानीय शिक्षाविदों, विकास एजेंसियों और किसानों के साक्षात्कार के आधार पर अध्ययनकर्ता इस नतीजे पर पहुंचे हैं। यह अध्ययन पूर्वोत्तर भारत के सिक्किम में किया गया है। अध्ययनकर्ताओं का कहना है कि भू-जलविज्ञानियों, सरकारी एजेंसियों और स्थानीय समुदायों के बीच बेहतर तालमेल को बढ़ावा देने की जरूरत है। ऐसा करने से जलवायु परिवर्तन से संबंधित सूखे एवं बाढ़ जैसी चरम स्थितियों और जल सुरक्षा के बारे में समझ विकसित करने और उससे निपटने लिए प्रभावी रणनीति तैयार करने में मदद मिल सकती है।

रणनीतियों के विफल होने के कारण : इस अध्ययन में शामिल शोधकर्ता डॉ. मनीष कुमार गोयल ने बताया कि आमतौर पर जलवायु अनुकूलन से जुड़ी रणनीतियां प्रभावी नहीं हो पातीं। इन रणनीतियों के विफल होने के लिए मुख्य रूप से तीन कारणों की पहचान इस अध्ययन में की गई है। प्रभावित समुदायों की आवश्यकताओं के बारे में पर्याप्त समझ की कमी, शोधकर्ताओं एवं नीति निर्माताओं द्वारा चिह्नित अनुकूलन रणनीतियों को समझने और उन्हें अपनाने में समुदायों की अक्षमता व धन के अभाव को इसके लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार पाया गया है। जलवायु परिवर्तन के कारण दुनिया के जिन हिस्सों में जल सुरक्षा के गंभीर रूप से प्रभावित होने की आशंका है, वहां शोध, नीति निर्माण और अनुकूलन कायम करने के प्रयासों के बीच अंतर को कम करना चुनौती बनी हुई है। इस अंतर को पाटने के लिए कई तरह प्रयास दुनियाभर में किए जा रहे हैं। यह अध्ययन इसी दिशा में किया गया एक प्रयास माना जा रहा है।

स्थानीय समुदायों को सक्षम बनाने की जरूरत

डॉ. गोयल के मुताबिक, जलवायु अनुकूलन स्थापित करने के लिए स्थानीय समुदायों को सक्षम बनाने के प्रयास एवं रणनीतियां आमतौर पर शोध-आधारित निर्णयों पर आधारित होती हैं। इन निर्णयों में निर्धारित की गई रणनीतियों और तकनीकों के बारे में उम्मीद की जाती है कि स्थानीय समुदाय उन्हें अपनाएंगे और उन पर अमल करेंगे, लेकिन ये रणनीतियां कारगर नहीं हो पातीं। जलवायु परिवर्तन की चरम स्थितियों में ही नहीं, बल्कि जल सुरक्षा जैसी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए भी स्थानीय समुदायों को सक्षम बनाए जाने की जरूरत है। अध्ययन के नतीजे जलवायु अनुकूलन स्थापित करने संबंधी कार्यक्रमों एवं परियोजनाओं को अधिक प्रभावी बनाने में मददगार हो सकते हैं।